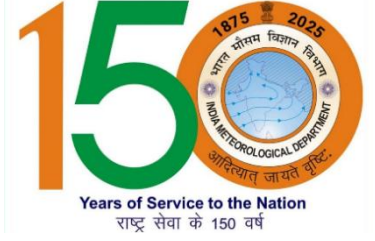




भारत सरकार
Government of India
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
(एम. ओ. ई. एस.)
Ministry of Earth Sciences
(MoES)



भारत मौसम विज्ञान विभाग

INDIA METEOROLOGICAL DEPARTMENT

मई 2026 के दौरान तापमान और वर्षा का मासिक आउटलुक

Monthly Outlook for the Temperature and Rainfall during May 2026

मुख्य बातें

- मई 2026 के दौरान, देश के कई हिस्सों में अधिकतम तापमान सामान्य या सामान्य से नीचे रहने की संभावना है। हालांकि, दक्षिण प्रायद्वीपीय भारत के कई हिस्सों, उत्तर-पूर्व के कुछ हिस्सों और उत्तर-पश्चिम भारत में तापमान सामान्य से अधिक रहने की संभावना है।
- मई 2026 के दौरान, देश के कई हिस्सों में न्यूनतम तापमान सामान्य से अधिक रहने की संभावना है। हालांकि, उत्तर-पश्चिम भारत के कई क्षेत्रों के साथ-साथ मध्य भारत के कुछ हिस्सों, उससे लगे हुए प्रायद्वीपीय भारत के क्षेत्रों और उत्तर-पूर्व भारत के दक्षिणी हिस्सों में न्यूनतम तापमान सामान्य से लेकर सामान्य से नीचे रहने की संभावना है।
- मई 2026 के दौरान, हिमालय की तलहटी के कुछ हिस्सों, पूर्वी तटवर्ती राज्यों, गुजरात और महाराष्ट्र में सामान्य से अधिक उष्ण लहर (हीटवेव/लू) के दिन रहने की संभावना है।
- मई 2026 के दौरान, पूरे देश में औसत वर्षा सामान्य से अधिक (दीर्घावधि औसत/ LPA का >110%) रहने की सबसे ज़्यादा संभावना है। देश के अधिकतर हिस्सों में वर्षा सामान्य या सामान्य से अधिक रहने की संभावना है, सिवाय पूर्वी और पूर्वोत्तर भारत तथा पूर्वी-मध्य भारत के कुछ हिस्सों को छोड़कर, जहाँ वर्षा सामान्य से नीचे रहने की संभावना है।
- वर्तमान में, भूमध्यरेखीय प्रशांत क्षेत्र में ईएनएसओ/ENSO-तटस्थ स्थितियाँ अल निनो/El Niño स्थितियों की ओर बढ़ रही हैं। नवीनतम एमएमसीएफएस/MMCFS (मानसून मिशन युग्मित पूर्वानुमान प्रणाली) पूर्वानुमान से संकेत मिलता है कि दक्षिण-पश्चिम मानसून की ऋतु के दौरान अल निनो/El Niño स्थितियाँ विकसित होने की संभावना है।
- वर्तमान में, हिंद महासागर में तटस्थ हिंद महासागर द्विध्रुव (आईओडी/IOD) स्थितियाँ बनी हुई हैं। नवीनतम जलवायु मॉडल संकेत देते हैं कि मानसून ऋतु के अंत तक सकारात्मक हिंद महासागर द्विध्रुव (IOD) स्थितियाँ विकसित होने की संभावना है।

मई 2026 के दौरान तापमान और वर्षा का मासिक आउटलुक

1. पृष्ठभूमि

भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD), पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (MoES) 2016 से ही गर्म और ठंडे मौसम की ऋतुओं के लिए ऋतुनिष्ठ पूर्वानुमान जारी करता आ रहा है, जिसमें देश के तापमान का पूर्वानुमान दिया जाता है। IMD अपने पूर्वानुमान मॉडलों को बेहतर बनाने के लिए लगातार काम कर रहा है और वर्तमान में 'मल्टी-मॉडल एन्सेम्बल' (एमएमई/MME) दृष्टिकोण का उपयोग करता है। इस दृष्टिकोण में विभिन्न वैश्विक जलवायु पूर्वानुमान और अनुसंधान केंद्रों के 'युग्मित वैश्विक जलवायु मॉडलों' (सीजीसीएम/CGCMs) का उपयोग किया जाता है, जिसमें IMD/MoES का 'मानसून मिशन जलवायु पूर्वानुमान प्रणाली' (MMCFS) मॉडल भी शामिल है।

IMD ने अब मई 2026 के लिए मासिक तापमान और वर्षा का पूर्वानुमान तैयार कर लिया है। मई 2026 के तापमान का पूर्वानुमान खंड 2 में प्रस्तुत किया गया है, जबकि खंड 3 में इसी महीने के लिए उष्ण लहर या 'लू' (हीटवेव) का पूर्वानुमान दिया गया है। उष्ण लहर या 'लू' (हीटवेव) असामान्य रूप से उच्च तापमान की वह अवधि होती है, जिसमें तापमान गर्म मौसम की ऋतु के सामान्य अधिकतम तापमान से भी अधिक हो जाता है। इसके अतिरिक्त, खंड 4 में, भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा मई 2026 के लिए मासिक वर्षा का पूर्वानुमान दिया गया है।

2. मई 2026 के लिए मासिक तापमान पूर्वानुमान

चित्र 1ए और चित्र 1बी में क्रमशः मई 2026 के लिए अधिकतम और न्यूनतम तापमान की अनुमानित संभावनाएँ प्रस्तुत की गई हैं। देश के कई हिस्सों में अधिकतम तापमान सामान्य या सामान्य से नीचे रहने की संभावना है। हालांकि, दक्षिण प्रायद्वीपीय भारत के कई हिस्सों, उत्तर-पूर्व के कुछ हिस्सों और उत्तर-पश्चिम भारत में तापमान सामान्य से अधिक रहने की संभावना है (चित्र 1ए)।

मई 2026 के दौरान, देश के कई हिस्सों में न्यूनतम तापमान सामान्य से अधिक रहने की संभावना है। हालांकि, उत्तर-पश्चिम भारत के कई क्षेत्रों के साथ-साथ मध्य भारत के कुछ हिस्सों, उससे लगे हुए प्रायद्वीपीय भारत के क्षेत्रों और उत्तर-पूर्व भारत के दक्षिणी हिस्सों में न्यूनतम तापमान सामान्य से लेकर सामान्य से नीचे रहने की संभावना है (चित्र 1बी)।

3. मई 2026 के लिए उष्ण लहर/लू (Heatwave) का पूर्वानुमान

मई 2026 में देश में लू वाले दिनों की संख्या में होने वाले असंगति (सामान्य से विचलन) का पूर्वानुमान चित्र 2 में दिखाया गया है। मई 2026 के दौरान, हिमालय की तलहटी के कुछ हिस्सों, पूर्वी तटवर्ती राज्यों, गुजरात और महाराष्ट्र में सामान्य से अधिक उष्ण लहर (हीटवेव/लू) के दिन रहने की संभावना है।

4. मई 2026 के लिए मासिक वर्षा पूर्वानुमान

मई 2026 के दौरान, पूरे देश में औसत वर्षा के सामान्य से अधिक (दीर्घावधि औसत/ LPA का >110%) होने की सबसे अधिक संभावना है। 1971-2020 के आंकड़ों के आधार पर, मई के महीने में पूरे देश के लिए वर्षा का LPA (दीर्घावधि औसत) लगभग 61.4 mm है।

मई 2026 के लिए भारत में वर्षा की टर्साइल श्रेणियों (सामान्य से अधिक, सामान्य और सामान्य से नीचे) की पूर्वानुमान संभावना चित्र 3 में दिखाई गई है। देश के अधिकतर हिस्सों में वर्षा सामान्य या सामान्य से अधिक रहने की संभावना है, सिवाय पूर्वी और पूर्वोत्तर भारत तथा पूर्वी-मध्य भारत के कुछ हिस्सों को छोड़कर, जहाँ वर्षा सामान्य से नीचे रहने की संभावना है। मानचित्र पर बिंदीदार क्षेत्र आमतौर पर मई के दौरान बहुत कम वर्षा प्राप्त करते हैं, जबकि ज़मीन के भीतर के सफ़ेद छायांकित क्षेत्र मॉडल से किसी भी पूर्वानुमान संकेत की अनुपस्थिति को दर्शाते हैं।

5. प्रशांत और हिंद महासागरों में समुद्र सतह तापमान (एसएसटी/SST) की स्थितियाँ

वर्तमान में, भूमध्यरेखीय प्रशांत क्षेत्र में ईएनएसओ/ENSO-तटस्थ स्थितियाँ अल निनो/El Niño की स्थितियों की ओर बढ़ रही हैं। नवीनतम एमएमसीएफएस/MMCFS (मानसून मिशन युग्मित पूर्वानुमान प्रणाली) पूर्वानुमान से संकेत मिलता है कि दक्षिण-पश्चिम मानसून की ऋतु के दौरान अल निनो/El Niño स्थितियाँ विकसित होने की संभावना है।

प्रशांत क्षेत्र में El Niño-दक्षिणी दोलन (ENSO) की स्थितियों के अलावा, हिंद महासागर के SST जैसे अन्य कारक भी भारत की जलवायु को प्रभावित करते हैं। हिंद महासागर में तटस्थ हिंद महासागर द्विध्रुव (IOD) की स्थितियाँ बनी हुई हैं। नवीनतम जलवायु मॉडल संकेत देते हैं कि मानसून की ऋतु के अंत तक सकारात्मक IOD स्थितियाँ विकसित होने की संभावना है।

6. विस्तारित रेंज का पूर्वानुमान और लघु से मध्यम रेंज की पूर्वानुमान सेवाएँ

IMD पूरे देश में वर्षा, और अधिकतम तथा न्यूनतम तापमान के विस्तारित रेंज के पूर्वानुमान (अगले चार सप्ताहों के लिए 7-दिनों के औसत पूर्वानुमान) भी उपलब्ध कराता है। ये पूर्वानुमान हर बृहस्पतिवार को अपडेट किए जाते हैं और 'मल्टी-मॉडल एन्सेम्बल डायनामिकल एक्सटेंडेड रेंज फोरकास्टिंग सिस्टम' पर आधारित होते हैं, जो वर्तमान में IMD में कार्यरत है। ये पूर्वानुमान IMD की वेबसाइट पर https://mausam.imd.gov.in/imd_latest/contents/extendedrangeforecast.php उपलब्ध हैं।

विस्तारित रेंज के पूर्वानुमान के बाद, IMD द्वारा प्रतिदिन अल्प से मध्यम रेंज का पूर्वानुमान जारी किया जाता है।

7. मई 2026 में तापमान और उष्ण लहर/लू के पूर्वानुमान का संभावित प्रभाव

7.1 उष्ण लहर/लू की स्थिति की बढ़ती संभावना से जन स्वास्थ्य, जल संसाधनों, बिजली की मांग और आवश्यक सेवाओं के लिए गंभीर जोखिम पैदा हो सकते हैं; इसका विशेष रूप से उन संवेदनशील आबादी पर असर पड़ सकता है जिनमें बुजुर्ग, बच्चे, बाहर काम करने वाले लोग और पहले से किसी बीमारी से पीड़ित व्यक्ति शामिल हैं। बढ़ा हुआ तापमान गर्मी से संबंधित बीमारियों का कारण बन सकता है और बुनियादी ढांचे तथा संसाधन प्रबंधन प्रणालियों पर अतिरिक्त दबाव डाल सकता है। तदनुसार, राज्य के अधिकारियों और जिला प्रशासनों को सलाह दी जाती है कि वे समय पर तैयारियों को सुनिश्चित करें, जिसमें 'कूलिंग शेल्टर' (गर्मी से बचाव के केंद्र) की परिचालन तत्परता, पीने के पानी की पर्याप्त आपूर्ति और स्वास्थ्य निगरानी को मजबूत करना शामिल है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) साप्ताहिक और विस्तारित अवधि के पूर्वानुमान जारी करता है, साथ ही 'प्रारंभिक चेतावनी' और 'प्रभाव-आधारित पूर्वानुमान' (IBF) भी देता है; ये पूर्वानुमान लू की स्थिति की संभावित गंभीरता और उसके भौगोलिक विस्तार को दर्शाते हैं, जिससे सक्रिय योजना बनाने में मदद मिलती है। आम जनता को सलाह दी जाती है कि वे मौसम से जुड़े अपडेट पर नज़र रखें और इस मौसम के दौरान एहतियाती उपाय अपनाएं, जैसे कि शरीर में पानी की कमी न होने देना (हाइड्रेटेड रहना), दिन की सबसे तेज़ गर्मी के समय बाहर निकलने से बचना और संवेदनशील व्यक्तियों का विशेष ध्यान रखना।

7.2 मई 2026 में तापमान के पूर्वानुमान का कृषि पर संभावित प्रभाव

- उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी भारत में देर से पकने वाली रबी फसलों की कटाई और मड़ाई के लिए स्थितियाँ मध्यम रूप से अनुकूल रहेंगी।
- देश के अधिकांश हिस्सों में अधिकतम तापमान सामान्य या सामान्य से नीचे रहने से गर्मी के तनाव (heat stress) को कम करने में मदद मिल सकती है, जिससे दानों के बेहतर भराव और कटाई के कार्यों में सहायता मिलेगी।
- दक्षिणी प्रायद्वीप, उत्तर-पूर्वी और उत्तर-पश्चिमी भारत के कुछ हिस्सों में स्थानीय स्तर पर तापमान सामान्य से अधिक रहने से धान (ग्रीष्मकालीन/बोरो), मक्का, दालों (मूंग, उड़द) और सब्जियों की प्रजनन अवस्थाओं (फूल आने और दाने भरने के समय) के दौरान गर्मी का तनाव उत्पन्न हो सकता है। इसके परिणामस्वरूप दानों का भराव ठीक से नहीं हो पाता और फूल झड़ जाते हैं।
- देश के अधिकांश हिस्सों में न्यूनतम तापमान सामान्य से अधिक रहने से श्वसन (respiration) के कारण होने वाली ऊर्जा की हानि बढ़ सकती है और धान, मक्का तथा दालों में दानों के भराव की क्षमता कम हो सकती है।
- गंगा के मैदानी इलाकों, तटीय और पश्चिमी भारत के कुछ हिस्सों में लू (heatwave) वाले दिनों की संख्या बढ़ने से फसलों में अत्यधिक वाष्पोत्सर्जन (evapotranspiration) के कारण नमी का गंभीर संकट उत्पन्न हो सकता है। इसके चलते आम, केला, टमाटर और मिर्च जैसी फसलों के फूल और फल झड़ सकते हैं, तथा फलों और सब्जियों पर 'सनबर्न' (धूप से जलने) का असर दिख सकता है।
- लू की चपेट में आने वाले क्षेत्रों में मिट्टी की नमी तेजी से कम हो सकती है, जिससे ग्रीष्मकालीन फसलें प्रभावित होंगी और सिंचाई की मांग बढ़ जाएगी।

मई 2026 के तापमान पूर्वानुमान के आधार पर कृषि संबंधी परामर्श

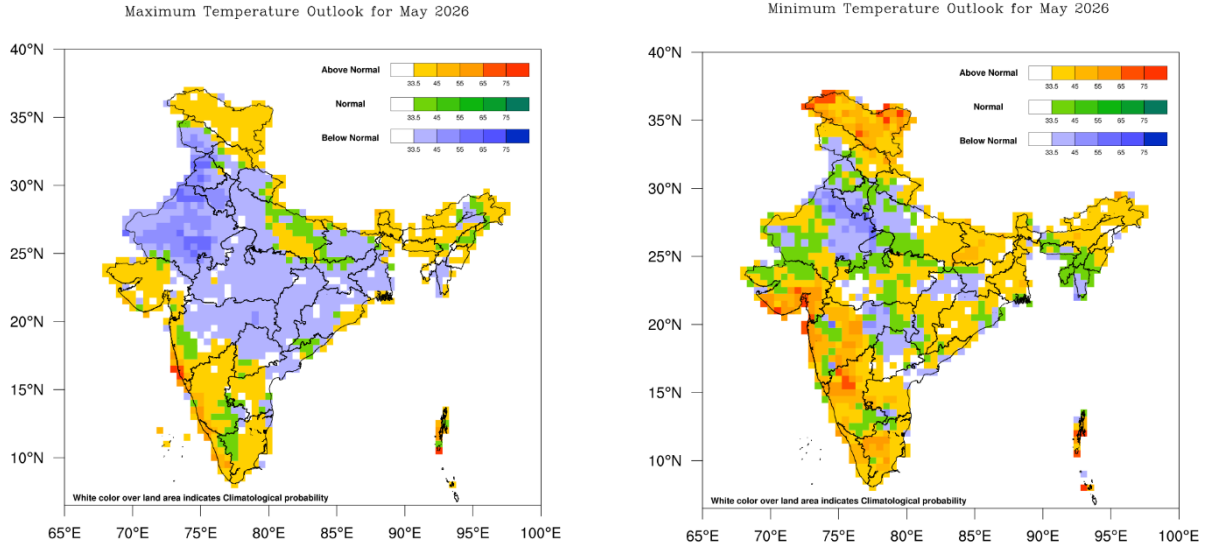
- धान, मक्का, दालों और सब्जियों जैसी खड़ी फसलों को उनकी वृद्धि की महत्वपूर्ण अवस्थाओं (फूल आने और दाने भरने के समय) में हल्की और बार-बार सिंचाई प्रदान करें; विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहाँ लू चलने की आशंका हो (जैसे गंगा के मैदानी इलाके, तटीय और पश्चिमी भारत)। फसलों को गर्मी के तनाव से बचाने में मदद करने के लिए पोटेशियम नाइट्रेट या अन्य 'एंटी-ट्रांसपिरेंट्स' (वाष्पोत्सर्जन-रोधी पदार्थों) का पत्तियों पर छिड़काव करें।
- मल्लिचिंग (mulching) के माध्यम से मिट्टी में पर्याप्त नमी बनाए रखें, और जहाँ भी संभव हो, ग्रीष्मकालीन फसलों के लिए कम अवधि वाली तथा गर्मी सहन करने में सक्षम किस्मों का चयन करें।
- खेतों में किए जाने वाले कार्यों (field operations) का समय सुबह और शाम के घंटों के लिए निर्धारित करें, तथा दोपहर के समय जब धूप सबसे तेज़ होती है, तब काम करने से बचें।
- पशुधन के लिए छाया, पीने का पर्याप्त पानी और हवादार जगह की व्यवस्था करें; दोपहर के सबसे गर्म घंटों के दौरान पशुओं को अत्यधिक गर्मी के संपर्क में आने से बचाएँ।
- फसलों में कीटों और रोगों के प्रकोप पर नियमित रूप से नज़र रखें, और यदि प्रकोप बढ़ता है, तो उसके नियंत्रण के लिए उचित उपाय अपनाएँ।

8. मई 2026 में वर्षा के पूर्वानुमान का कृषि पर संभावित प्रभाव

- देश के अधिकांश हिस्सों में सामान्य से अधिक वर्षा होने से मिट्टी में नमी की उपलब्धता बढ़ सकती है, जो गर्मियों की फसलों और खरीफ की बुवाई के लिए ज़मीन तैयार करने के काम के लिए फायदेमंद होगी।
- अत्यधिक वर्षा के कारण जलभराव, हवा का ठीक से न पहुँचना (poor aeration) और फफूंद जनित रोगों की घटनाओं में वृद्धि हो सकती है।
- मिट्टी में नमी की बेहतर स्थिति, ज़मीन की जुताई और खरीफ की बुवाई से जुड़ी शुरुआती गतिविधियों में सहायक हो सकती है।
- जिन क्षेत्रों में अत्यधिक वर्षा होती है, वहाँ देर से पकने वाली रबी की फसलों की कटाई और गहाई के कार्यों में देरी हो सकती है।
- जिन क्षेत्रों में वर्षा कम होती है, वहाँ मिट्टी में नमी की कमी (stress) की समस्या उत्पन्न हो सकती है—विशेषकर वर्षा-आधारित क्षेत्रों में—जिससे खड़ी गर्मियों की फसलें और सिंचाई की उपलब्धता प्रभावित हो सकती है।

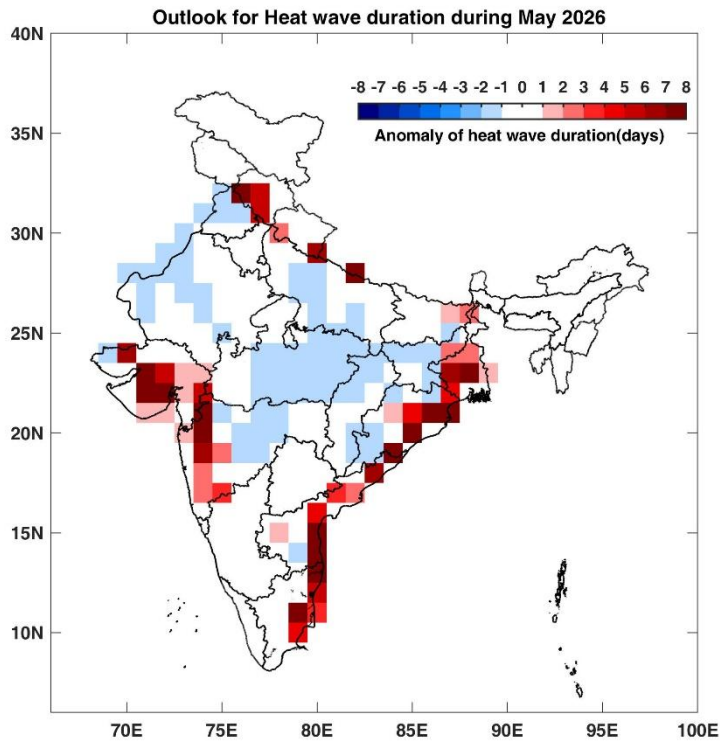
मई 2026 के वर्षा पूर्वानुमान के आधार पर कृषि-मौसम संबंधी सलाह

- जिन क्षेत्रों में सामान्य से अधिक वर्षा होने की संभावना है, वहाँ जलभराव से बचने के लिए खेतों में पानी की निकासी की उचित व्यवस्था सुनिश्चित करें।
- वर्षा के कारण होने वाले नुकसान को कम करने के लिए, मौसम के शुष्क रहने के दौरान पकी हुई फसलों की समय पर कटाई करें।
- जल संरक्षण के उपायों, जैसे कि मल्लिचिंग और सिंचाई की कुशल विधियों को अपनाएँ।
- नम परिस्थितियों में फफूंद जनित रोगों से बचाव के लिए पौधों की सुरक्षा के उचित उपाय अपनाएँ।



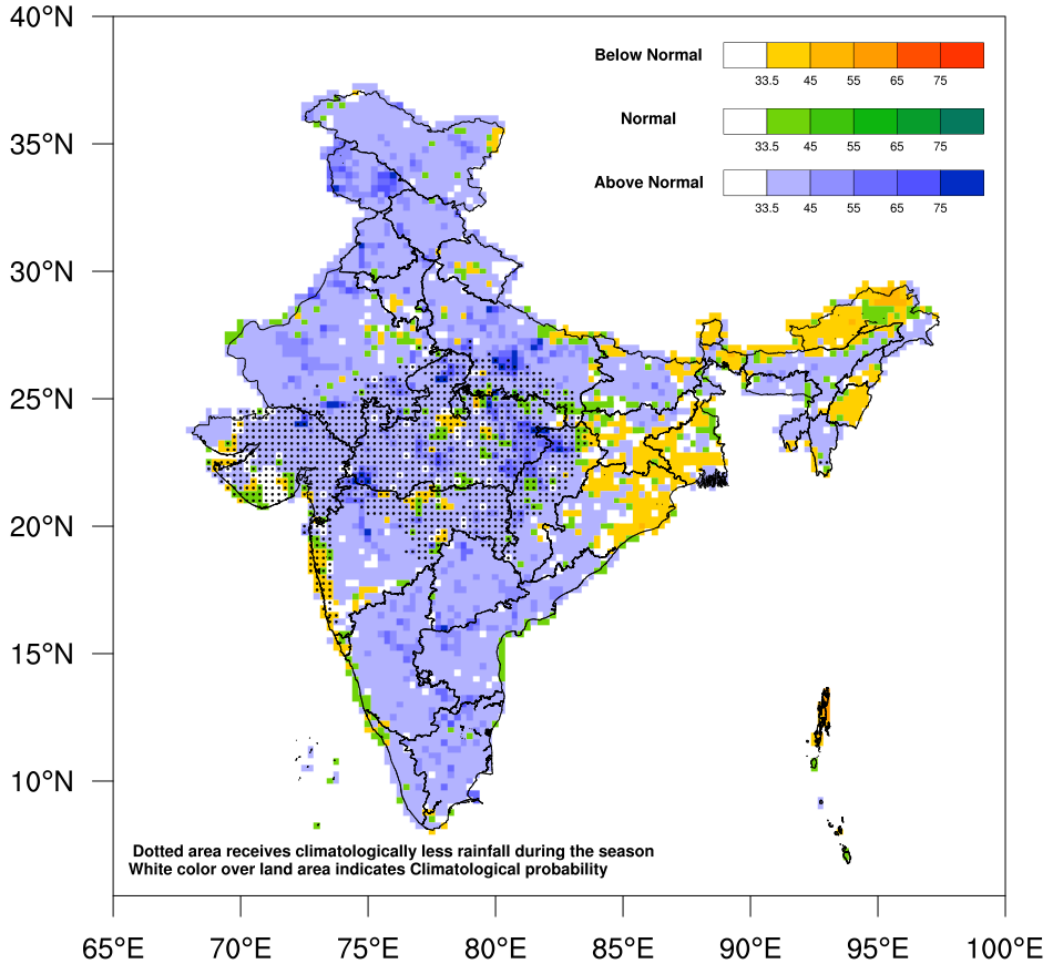
चित्र 1ए. मई 2026 के लिए अधिकतम तापमान का संभाव्यता पूर्वानुमान।

चित्र 1बी. मई 2026 के लिए न्यूनतम तापमान का संभाव्यता पूर्वानुमान।



चित्र 2. मई 2026 के लिए उष्ण लहर/लू की अवधि (दिनों में) की असंगति (सामान्य से विचलन)।

Probability rainfall forecast for May 2026



चित्र 3. मई 2026 के दौरान भारत में वर्षा के लिए टरसाइल श्रेणियों* (सामान्य से नीचे, सामान्य और सामान्य से अधिक) का संभाव्यता पूर्वानुमान। यह चित्र सबसे संभावित श्रेणियों के साथ-साथ उनकी संभावनाओं को भी दर्शाता है। (*टरसाइल श्रेणियों की जलवायु-संबंधी संभावनाएँ समान होती हैं, जो प्रत्येक के लिए 33.33% होती हैं)।